Content is available at: CRDEEP Journals
Journal homepage: http://www.crdeepjournal.org/category/journals/ijssah/

International Journal of Social Sciences Arts and Humanities
(ISSN: 2321-4147) (Scientific Journal Impact Factor: 6.002)
A Peer Reviewed UGC Approved Quarterly Journal

Research Paper

कृषि क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की भूमिका का एक आर्थिक अध्ययन: देहरादून जिले के विशेष संदर्भ में

स्निग्धा तोमर[1]* और डॉ. हेमलता नेगी[2]
[1]शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, रास बिहारी बोस सुभारती विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड.
[2] सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, रास बिहारी बोस सुभारती विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड.

ARTICLE DETAILS

अनुरूपी लेखक:
विकास जोशी

प्रमुख शब्दावली
महिला सशक्तिकरण, कृषि क्षेत्र, आर्थिक भूमिका, ग्रामीण विकास, कृषि उत्पादकता

ABSTRACT

यह शोधपत्र कृषि क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की आर्थिक भूमिका पर एक व्यापक सैद्धांतिक समीक्षा प्रस्तुत करता है, जिसमें देहरादून जिले पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारत में कृषि एक महत्वपूर्ण आजीविका बनी हुई है, जहाँ महिलाएँ एक महत्वपूर्ण कार्यबल बनाती हैं, लेकिन उनके सशक्तिकरण को सीमित करने वाली संरचनात्मक बाधाओं का सामना करती हैं। कई सैद्धांतिक ढाँचों, लिंग अध्ययनों, आर्थिक विकास सिद्धांतों और कृषि अर्थशास्त्र साहित्य पर आधारित, यह समीक्षा कृषि में महिला सशक्तिकरण की प्रमुख अवधारणाओं, निर्धारकों और प्रभावों का संश्लेषण करती है। यह सशक्तिकरण के आर्थिक निहितार्थों, महिला किसानों द्वारा सामना की जाने वाली बाधाओं और देहरादून जैसे स्थानीय संदर्भों पर विशेष जोर देते हुए नीतिगत हस्तक्षेपों पर प्रकाश डालता है। इसका उद्देश्य कृषि में महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावादेने के उद्देश्य से अनुभवजन्य अनुसंधान और नीति निर्माण के लिए एक वैचारिक आधार प्रदान करना है।

1. परिचय

1.1. भारत में कृषि क्षेत्र की पृष्ठभूमि

कृषि पारंपरिक रूप से भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, जो देश के लगभग आधे कार्यबल को रोजगार देती है और राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (भारत सरकार, 2020) में लगभग 17-18% का योगदान देती है। यह क्षेत्र खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, ग्रामीण आजीविका का समर्थन करने और संबद्ध उद्योगों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तेजी से औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के बावजूद, कृषि एक प्रमुख क्षेत्र बना हुआ है, खासकर ग्रामीण भारत में, जहाँ अधिकांश आबादी खेती और संबंधित गतिविधियों पर निर्भर करती है (एफएओ, 2011)। भारत में कृषि क्षेत्र अत्यधिक विविधतापूर्ण है, जिसमें निर्वाह खेती से लेकर वाणिज्यिक कृषि तक, विभिन्न फसलें, पशुधन, मत्स्य पालन और बागवानी शामिल हैं (सिंह और सिंह, 2016)। महिलाएँ कृषि कार्यबल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाती हैं, जो अक्सर बुवाई से लेकर कटाई के बाद की प्रक्रिया तक की गतिविधियों में संलग्न होती हैं। फिर भी, आधिकारिक सांख्यिकी और नीतिगत ढाँचों में उनके योगदान को काफी हद तक अनदेखा और पहचाना नहीं गया है (डॉस, 2011)।

2. कृषि में महिलाओं की भूमिका: एक अवलोकन

भारत में कृषि श्रम शक्ति में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 33% है, लेकिन कुछ राज्यों और क्षेत्रों में यह आँकड़ा काफी अधिक है, जो कुछ क्षेत्रों में 70% तक पहुँच जाता है (एनएसएसओ, 2019)। उनकी भागीदारी कृषि उत्पादन के विभिन्न चरणों में फैली हुई है - भूमि की तैयारी, रोपण, निराई, कटाई, प्रसंस्करण और विपणन (कुमार और शर्मा, 2018)। इनके अलावा, महिलाएँ अक्सर पशुपालन, डेयरी फार्मिंग और किचन गार्डनिंग में भी संलग्न होती हैं। अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, कृषि में महिलाओं को ऐसी प्रणालीगत बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो भूमि, ऋण, विस्तार सेवाओं और प्रौद्योगिकी (एफएओ, 2011) जैसे संसाधनों तक उनकी पहुँच को सीमित करती हैं। सामाजिक मानदंड और पितृसत्तात्मक संरचनाएँ महिलाओं की गतिशीलता और निर्णय लेने की शक्ति को और बाधित करती हैं, जिससे उन्हें घर और समुदाय में सहायक भूमिकाओं में

*Author can be contacted at: *शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, रास बिहारी बोस सुभारती विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड.*
Received*: 02-05-2025*; Sent for Review on: *-08-05- 2024*; Draft sent to Author for corrections*: 12-05-2025*; Accepted on*: 20-05-2025*; Online Available from *24-05-2025*
DOI: 10.13140/RG.2.2.19127.02725
IJSSAH: *-9927/**© 2025 CRDEEP Journals. All Rights Reserved.*

धकेल दिया जाता है (अग्रवाल, 1994)। ये सीमाएँ न केवल उनकी उत्पादकता और आय को प्रभावित करती हैं, बल्कि उनके सशक्तिकरण और सामाजिक स्थिति को भी प्रभावित करती हैं।

2.1. कृषि में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा महिलाएँ ऐसे संदर्भ में रणनीतिक जीवन विकल्प बनाने की क्षमता प्राप्त करती हैं, जहाँ पहले उन्हें यह क्षमता नहीं दी जाती थी (कबीर, 1999)। कृषि के संदर्भ में, सशक्तिकरण में उत्पादक संसाधनों तक पहुँच, निर्णय लेने में भागीदारी, आय और परिसंपत्तियों पर नियंत्रण और आर्थिक और सामाजिक परिणामों को प्रभावित करने की क्षमता शामिल है (मीनज़ेन-डिक एट अल., 2011)। आर्थिक सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण आयाम है, जिसमें आर्थिक संसाधनों पर महिलाओं का नियंत्रण और आय उत्पन्न करने की उनकी क्षमता शामिल है, जो घरों और समुदायों के भीतर उनकी सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाता है (अलसोप और हेनसन, 2005)। सशक्त महिलाएँ अपने परिवारों के स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण में निवेश करने की अधिक संभावना रखती हैं, जिससे वे व्यापक विकास लक्ष्यों में योगदान दे सकती हैं (विश्व बैंक, 2012)।

2.2. कृषि क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण का महत्व

कृषि में महिलाओं के सशक्तिकरण का आर्थिक विकास, खाद्य सुरक्षा और सतत विकास पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। संसाधनों और निर्णय लेने की क्षमता तक महिलाओं की पहुँच कृषि उत्पादकता में वृद्धि ला सकती है, क्योंकि अध्ययनों से पता चलता है कि इनपुट उपयोग और प्रौद्योगिकी अपनाने में लैंगिक असमानताएँ सीधे पैदावार को प्रभावित करती हैं (क्विसुम्बिंग एट अल., 2014)। इसके अलावा, महिला सशक्तिकरण गरीबी में कमी लाने में भी योगदान देता है, क्योंकि महिलाएँ बच्चों के पोषण और शिक्षा सहित घरेलू कल्याण के लिए संसाधनों का अधिक प्रभावी ढंग से आवंटन करती हैं (स्मिथ एट अल., 2003)। सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी), विशेष रूप से लैंगिक समानता पर एसडीजी 5 और शून्य भूख पर एसडीजी 2, खाद्य सुरक्षा और सतत आजीविका प्राप्त करने के लिए कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने के महत्व को स्पष्ट रूप से पहचानते हैं (संयुक्त राष्ट्र, 2015)।

2.3. देहरादून का सामाजिक-आर्थिक संदर्भ

उत्तराखंड की राजधानी देहरादून जिले की विशेषता इसके अनूठे कृषि-जलवायु क्षेत्रों से है, जो अनाज की फसलों, बागवानी (आम, नींबू, लीची) और डेयरी फार्मिंग (उत्तराखंड कृषि विभाग, 2020) सहित विविध कृषि गतिविधियों का समर्थन करते हैं। जिला मुख्य रूप से ग्रामीण है, जिसमें आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है (उत्तराखंड सरकार, 2019)। देहरादून में महिलाएँ कृषि में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं, लेकिन उन्हें कई सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें सीमित भूमि स्वामित्व, कम साक्षरता दर और संस्थागत ऋण और कृषि विस्तार सेवाओं तक सीमित पहुँच शामिल है (सिंह और राणा, 2017)। पारंपरिक लिंग मानदंड अक्सर घरों और सामुदायिक संगठनों दोनों में निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी को कम करते हैं।

2.4. अध्ययन का औचित्य

कृषि में महिलाओं के मान्यता प्राप्त महत्व के बावजूद, उनके आर्थिक सशक्तिकरण के बारे में ज्ञान का अंतर मौजूद है, खासकर देहरादून जैसे स्थानीय संदर्भों में। कृषि में महिलाओं की भूमिका और उनके सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना ग्रामीण विकास और लैंगिक समानता के उद्देश्य से प्रभावी नीतियों और कार्यक्रमों को तैयार करने के लिए आवश्यक है। इस अध्ययन का उद्देश्य देहरादून जिले के कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका और सशक्तिकरण का आर्थिक विश्लेषण प्रदान करके इस अंतर को भरना है। आय सृजन, संसाधन पहुंच और निर्णय लेने सहित आर्थिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके, अध्ययन लिंग और कृषि पर व्यापक प्रवचन में योगदान देना चाहता है।

2.5 . अध्ययन के उद्देश्य इस अध्ययन के प्राथमिक उद्देश्य हैं:

कृषि क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण से संबंधित सैद्धांतिक रूपरेखा की समीक्षा करना।

3. कृषि में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा

3.1 महिला सशक्तिकरण की परिभाषा और आयाम

महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें संसाधनों तक पहुंच, निर्णय लेने की शक्ति, एजेंसी और आर्थिक लाभों पर नियंत्रण शामिल है (कबीर, 1999)। कृषि में, सशक्तिकरण भूमि, इनपुट, ऋण, प्रौद्योगिकी और कृषि निर्णयों में भागीदारी तक फैला हुआ है (डॉस, 2018)।

3.2 सैद्धांतिक रूपरेखाएँ लिंग और विकास (जीएडी)

सिद्धांत: संरचनात्मक लैंगिक असमानताओं पर जोर देता है और विकास में शक्ति संबंधों को बदलने की वकालत करता है (मोजर, 1993)। क्षमता दृष्टिकोण (सेन, 1999): महिलाओं की अपने जीवन में चुनाव करने की क्षमताओं का विस्तार करने पर ध्यान केंद्रित करता है। सामाजिक पूंजी सिद्धांत: महिलाओं को सशक्त बनाने में सामाजिक नेटवर्क और सामूहिक कार्रवाई की भूमिका पर प्रकाश डालता है (पुटनम, 1995), विशेष रूप से ग्रामीण कृषि में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से। • सौदेबाजी मॉडल: अंतर-घरेलू सौदेबाजी मॉडल (अग्रवाल, 1997) विश्लेषण करते हैं कि संसाधनों पर नियंत्रण महिलाओं के निर्णय लेने और सशक्तीकरण को कैसे प्रभावित करता है।

4. कृषि में महिलाओं की आर्थिक भूमिका: सैद्धांतिक दृष्टिकोण

कृषि में महिलाओं की आर्थिक भूमिका एक जटिल और बहुआयामी विषय है जो ग्रामीण परिवारों और समुदायों के भीतर मजदूरों, किसानों, उद्यमियों और निर्णय लेने वालों के रूप में उनके योगदान को शामिल करता है। ऐतिहासिक रूप से, कृषि में महिलाओं के काम को कम करके आंका गया है,

कम रिपोर्ट किया गया है, और अक्सर नीतिगत चर्चा और सांख्यिकीय ढांचे दोनों में अदृश्य बना दिया गया है। हालाँकि, हाल के सैद्धांतिक और अनुभवजन्य अध्ययन खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, कृषि उत्पादकता बढ़ाने और घरेलू कल्याण में सुधार करने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हैं। यह खंड कृषि में महिलाओं की भूमिकाओं के बारे में प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर विस्तार से चर्चा करता है, उनके योगदान, उत्पादकता पर उनके सशक्तिकरण के प्रभाव और व्यापक सामाजिक-आर्थिक निहितार्थों की जाँच करता है।

4.1 कृषि श्रमिक और किसान के रूप में महिलाएँ

4.1.1 कृषि में महिलाओं की बहुमुखी भूमिकाएँ

कृषि में महिलाओं की भागीदारी विविधतापूर्ण और गतिशील है, जिसमें अवैतनिक पारिवारिक श्रम, मज़दूरी मज़दूर, स्वतंत्र किसान और तेज़ी से कृषि उद्यमी जैसी विभिन्न भूमिकाएँ शामिल हैं। भारत सहित कई विकासशील देशों में, महिलाएँ कृषि कार्यबल का लगभग आधा हिस्सा हैं (FAO, 2011)। वे कृषि उत्पादन के लगभग हर चरण में शामिल हैं, जिसमें भूमि की तैयारी, बुवाई, रोपाई, निराई, कटाई, कटाई के बाद प्रसंस्करण और उपज का विपणन शामिल है (कुमार और शर्मा, 2018)।

इस व्यापक भागीदारी के बावजूद, कृषि में महिलाओं का श्रम अक्सर अदृश्य और अपरिचित रहता है, क्योंकि प्रचलित सामाजिक मानदंड उनके काम को आर्थिक रूप से उत्पादक गतिविधि के बजाय घरेलू कर्तव्यों के विस्तार के रूप में वर्गीकृत करते हैं। इस कम मूल्यांकन के कारण आधिकारिक आँकड़ों और विकास नीतियों में महिलाओं के योगदान को हाशिए पर रखा जाता है, जो पुरुष किसानों और भूस्वामियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं (डॉस, 2011)।

4.1.2 "अदृश्य कार्यकर्ता" सिद्धांत

महिला की अवधारणा कृषि में "अदृश्य श्रमिक" के रूप में जाना जाने वाला शब्द कृषि जनगणनाओं और आर्थिक सर्वेक्षणों में महिलाओं के श्रम योगदान की प्रणालीगत उपेक्षा और कम रिपोर्टिंग को दर्शाता है। यह अदृश्यता कई कारकों से उपजी है। सबसे पहले, महिलाएँ अक्सर औपचारिक अनुबंधों या वेतन समझौतों के बिना अवैतनिक पारिवारिक मज़दूरों के रूप में काम करती हैं, जिससे उनके योगदान को मापना मुश्किल हो जाता है (डॉस, 2011)। दूसरा, भूमि स्वामित्व और कृषि प्रबंधन की भूमिकाएँ, जो पारंपरिक रूप से पुरुषों से जुड़ी हैं, कृषि डेटा संग्रह का केंद्र बिंदु होती हैं, जो उत्पादन में महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिकाओं को प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, श्रम का लिंग आधारित विभाजन अक्सर महिलाओं के काम को निराई, बीज छाँटने और कटाई के बाद प्रसंस्करण जैसे कार्यों में विभाजित करता है, जिन्हें कृषि उत्पादकता के लिए उनके महत्वपूर्ण महत्व के बावजूद माध्यमिक और आर्थिक रूप से कम महत्वपूर्ण माना जाता है (मेनज़ेन-डिक एट अल., 2011)। "अदृश्य श्रमिक" सिद्धांत इन पारंपरिक वर्गीकरणों को इस बात पर प्रकाश डालकर चुनौती देता है कि कैसे महिलाओं के योगदान को बाहर करने से कृषि अर्थव्यवस्थाओं की अधूरी समझ बनती है और नीतिगत हस्तक्षेपों को गलत जानकारी मिलती है।

4.1.3 किसान और उद्यमी के रूप में महिलाएँ मज़दूरों से परे,

महिलाएँ स्वतंत्र किसान और उद्यमी के रूप में भूमिकाएँ निभा रही हैं, भूमि पर खेती कर रही हैं, उत्पादन संबंधी निर्णय ले रही हैं और विपणन गतिविधियों में संलग्न हैं। यह बदलाव विशेष रूप से उन क्षेत्रों में स्पष्ट है जहाँ पुरुषों के पलायन के कारण कृषि में महिलाओं का वर्चस्व बढ़ा है - जिसका अर्थ है कि महिलाएँ खेतों पर प्राथमिक प्रबंधक और निर्णयकर्ता हैं (FAO, 2011)। महिला किसानों को अक्सर अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें भूमि स्वामित्व, ऋण, विस्तार सेवाओं और प्रौद्योगिकी तक सीमित पहुँच शामिल है, जो उनकी उत्पादकता और आर्थिक क्षमता को बाधित करती है (अग्रवाल, 1994)। फिर भी, अनुभवजन्य अध्ययनों से पता चलता है कि जब महिलाओं के पास सुरक्षित भूमि अधिकार और संसाधनों तक पहुँच होती है, तो वे टिकाऊ कृषि पद्धतियों और घरेलू कल्याण में अधिक निवेश करती हैं (क्विसुम्बिंग एट अल., 2014)। महिलाओं के बीच कृषि उद्यमिता डेयरी फार्मिंग, पोल्ट्री, बागवानी और कृषि प्रसंस्करण उद्यमों जैसी गतिविधियों तक भी फैली हुई है, जो आय स्रोतों में विविधता लाती है और आर्थिक लचीलापन बढ़ाती है (डॉस, 2018)। ये उद्यमशील भूमिकाएँ महिलाओं की आर्थिक एजेंसी को बढ़ाती हैं और ग्रामीण विकास में योगदान देती हैं।

4.2 कृषि उत्पादकता पर प्रभाव

4.2.1 महिला सशक्तिकरण और उत्पादकता के बीच संबंध

कृषि उत्पादकता पर आर्थिक सिद्धांत कृषि प्रदर्शन को बढ़ाने के एक प्रमुख चालक के रूप में महिला सशक्तिकरण के महत्व को तेजी से पहचानते हैं। इस संदर्भ में सशक्तिकरण का अर्थ है उत्पादक संसाधनों तक पहुँचने और उन्हें नियंत्रित करने, निर्णय लेने में भाग लेने और अपने श्रम के फल से लाभ उठाने की महिलाओं की क्षमता (अलसोप और हेनसन, 2005)। अध्ययनों से पता चलता है कि महिलाओं को सशक्त बनाने से भूमि, श्रम और पूंजी का अधिक कुशल उपयोग होता है, जो उच्च फसल पैदावार और विविध कृषि उत्पादन में तब्दील होता है (क्विसुम्बिंग एट अल., 2014)। उदाहरण के लिए, जब महिलाओं के पास इनपुट उपयोग पर निर्णय लेने की शक्ति होती है, तो वे बेहतर बीज, उर्वरक और सिंचाई में निवेश करने की अधिक संभावना रखती हैं, जो सभी उत्पादकता लाभ में योगदान करते हैं (एफएओ, 2011)।

4.2.2 संसाधनों तक पहुँच में लैंगिक अंतर

कृषि उत्पादकता को अधिकतम करने में एक निरंतर बाधा प्रमुख उत्पादक संसाधनों तक पहुँच में लैंगिक अंतर है। महिलाओं के पास आमतौर पर पुरुषों की तुलना में भूमि स्वामित्व, ऋण, कृषि इनपुट, विस्तार सेवाओं और प्रौद्योगिकी तक कम पहुँच होती है (मेनजेन-डिक एट अल., 2011)। यह असमानता उत्पादकता बढ़ाने वाले नवाचारों को अपनाने की उनकी क्षमता को बाधित करती है और कृषि उत्पादन की समग्र दक्षता को कम करती

है। उदाहरण के लिए, खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) का अनुमान है कि उत्पादक संसाधनों तक पहुँच में लैंगिक अंतर को कम करने से कृषि उपज में 20-30% की वृद्धि हो सकती है, जिससे वैश्विक स्तर पर भूखे लोगों की संख्या में उल्लेखनीय कमी आएगी (एफएओ, 2011)। हालाँकि, भेदभावपूर्ण विरासत कानून, सीमित गतिशीलता और सामाजिक मानदंड जैसी संरचनात्मक बाधाएँ अक्सर महिलाओं की संसाधनों तक पहुँच को प्रतिबंधित करती हैं।

4.2.3 केस स्टडी और अनुभवजन्य साक्ष्य

अनुभवजन्य अध्ययन महिला सशक्तिकरण से जुड़े उत्पादकता लाभों के सम्मोहक साक्ष्य प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण एशिया में, शोध से पता चलता है कि जब महिलाओं के पास सुरक्षित भूमि स्वामित्व और इनपुट तक समान पहुंच होती है, तो कृषि उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार होता है (क्विसुम्बिंग एट अल., 2014)। इसी तरह, विस्तार सेवाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने वाले हस्तक्षेपों ने बेहतर कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने में वृद्धि की है (कुमार और शर्मा, 2018)। अफ्रीका में, महिलाओं की कृषि उद्यमिता और माइक्रोक्रेडिट तक पहुंच का समर्थन करने वाले कार्यक्रमों ने फसल विविधीकरण और आय सृजन को बढ़ावा दिया है, जो सशक्त महिला किसानों की आर्थिक क्षमता को उजागर करता है (डॉस, 2018)। ये अध्ययन कृषि प्रणालियों की पूर्ण उत्पादकता क्षमता को अनलॉक करने के लिए लैंगिक असमानताओं को संबोधित करने के महत्व को रेखांकित करते हैं।

4.3 महिला सशक्तिकरण और घरेलू कल्याण

4.3.1 आय आवंटन और घरेलू निर्णय लेना प्रत्यक्ष से परे

कृषि उत्पादन में योगदान के अलावा, महिलाओं के सशक्तीकरण का घरेलू कल्याण पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। अंतर-घरेलू सौदेबाजी के सैद्धांतिक मॉडल बताते हैं कि जब महिलाएं घरेलू आय का बड़ा हिस्सा नियंत्रित करती हैं, तो वे बाल स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और समग्र पारिवारिक कल्याण के लिए अधिक संसाधन आवंटित करती हैं (अग्रवाल, 1997)। यह पैटर्न प्राथमिक देखभाल करने वालों और घरेलू कल्याण के प्रबंधकों के रूप में महिलाओं की भूमिकाओं को दर्शाता है, जिससे सकारात्मक बाहरी प्रभाव जैसे कि बेहतर बाल विकास परिणाम, उच्च विद्यालय उपस्थिति और कम कुपोषण दर (स्मिथ एट अल।, 2003) होते हैं। नतीजतन, महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण न केवल उनकी अपनी आजीविका को लाभ पहुंचाता है बल्कि गरीबी के चक्र को तोड़ने में भी योगदान देता है। 4.3.2 सामाजिक और स्वास्थ्य परिणाम कृषि में महिलाओं का सशक्तीकरण व्यापक सामाजिक और स्वास्थ्य लाभों से भी जुड़ा हुआ है। सशक्त महिलाओं में अधिक गतिशीलता और स्वायत्तता होती है, जो स्वास्थ्य सेवाओं की तलाश करने और सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेने की उनकी क्षमता में सुधार करती है (विश्व बैंक, 2012)। इसके अलावा, उनके बढ़े हुए आर्थिक योगदान से घरों और समुदायों में उनकी स्थिति में सुधार होता है, पारंपरिक लैंगिक मानदंडों को चुनौती मिलती है और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है। कृषि आय पर महिलाओं के नियंत्रण को बढ़ाने वाले कार्यक्रम अक्सर मातृ स्वास्थ्य में सुधार और प्रजनन दर में कमी लाते हैं, क्योंकि महिलाओं को प्रजनन संबंधी निर्णयों में अधिक अधिकार प्राप्त होते हैं (मीनजेन-डिक एट अल., 2011)। इन परिणामों का सतत विकास और जनसंख्या स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

4.3.3 शिक्षा और मानव पूंजी विकास

महिलाओं का सशक्तीकरण स्वयं और उनके बच्चों के लिए शिक्षा और कौशल विकास में अधिक निवेश की सुविधा प्रदान करता है। अध्ययनों से पता चलता है कि जिन घरों में महिलाओं के पास निर्णय लेने की अधिक शक्ति होती है, वे स्कूली शिक्षा और शैक्षिक सामग्री पर अधिक खर्च करते हैं, जिससे मानव पूंजी विकास को बढ़ावा मिलता है (विश्व बैंक, 2012)। शिक्षित महिलाएँ नवीन कृषि पद्धतियों को अपनाने और खेत प्रबंधन में सुधार करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होती हैं, जिससे एक ऐसा पुण्य चक्र बनता है जो कृषि उत्पादकता और ग्रामीण आजीविका को लाभ पहुँचाता है। शिक्षा महिलाओं की अपने अधिकारों की वकालत करने और स्थानीय शासन संरचनाओं में भाग लेने की क्षमता को भी बढ़ाती है, जिससे सशक्तीकरण को और बल मिलता है (कबीर, 1999)।

4.4 कृषि में महिलाओं की आर्थिक भूमिका के लिए चुनौतियाँ और बाधाएँ

4.4.1 संरचनात्मक और संस्थागत बाधाएँ

कृषि में महिलाओं के मान्यता प्राप्त महत्व के बावजूद, कई संरचनात्मक और संस्थागत बाधाएँ उनके आर्थिक सशक्तीकरण को सीमित करती हैं। भूमि स्वामित्व की असुरक्षा, प्रतिबंधात्मक उत्तराधिकार कानून और किसानों के रूप में औपचारिक मान्यता का अभाव महिलाओं की भूमि और ऋण तक पहुँच में बाधा डालता है (अग्रवाल, 1994)। वित्तीय संस्थान अक्सर भूमि के शीर्षक को संपार्श्विक के रूप में मांगते हैं, जिससे महिलाएँ औपचारिक ऋण बाज़ारों से बाहर हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त, कृषि विस्तार सेवाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम अक्सर लिंग-पक्षपाती होते हैं, जो पुरुषों को लक्षित करते हैं जबकि महिला किसानों की उपेक्षा करते हैं (एफएओ, 2011)। सीमित गतिशीलता, अवैतनिक देखभाल कार्य के कारण समय की कमी और सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंड कृषि बाज़ारों और निर्णय लेने वाले मंचों में महिलाओं की भागीदारी को और भी सीमित करते हैं।

4.4.2 सांस्कृतिक मानदंड और लिंग भूमिकाएँ

पितृसत्तात्मक मानदंड ग्रामीण समाजों में लिंग भूमिकाओं को आकार देते हैं, जो अक्सर महिलाओं को अवैतनिक श्रम और घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित रखते हैं (कबीर, 1999)। ये मानदंड महिलाओं की संसाधनों तक पहुँच, गतिशीलता और घरों में सौदेबाजी की शक्ति को प्रभावित करते हैं। महिलाओं की भूमिकाओं के बारे में सामाजिक अपेक्षाएँ उन्हें नई तकनीक अपनाने या कृषि सहकारी समितियों में भाग लेने से हतोत्साहित कर सकती हैं (मीनज़ेन-डिक एट अल., 2011)। इसलिए महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रयासों में न केवल आर्थिक कारकों को संबोधित करना चाहिए, बल्कि लैंगिक असमानताओं को बनाए रखने वाले अंतर्निहित सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को भी संबोधित करना चाहिए। 4.5 नीतिगत निहितार्थ और सिफारिशें कृषि में महिलाओं की पूरी आर्थिक क्षमता का दोहन करने के लिए, नीतियों को संरचनात्मक बाधाओं को दूर करने और

लिंग-समावेशी विकास को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। प्रमुख नीतिगत सिफारिशों में शामिल हैं: कानूनी सुधारों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से महिलाओं के भूमि अधिकारों को सुनिश्चित करना (अग्रवाल, 2003)। महिलाओं की ज़रूरतों के हिसाब से ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुँच का विस्तार करना (मेयूक्स, 2001)। लिंग-संवेदनशील विस्तार सेवाओं और कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को डिज़ाइन करना (एफएओ, 2011)। • किसान संगठनों और निर्णय लेने वाली संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना (मीनजेन-डिक एट अल., 2011)।

• बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकियों में निवेश करना जो महिलाओं के अवैतनिक श्रम बोझ को कम करते हैं, जैसे कि जल और ऊर्जा सेवाएँ (विश्व बैंक, 2012)। सामाजिक मानदंडों को बदलने के प्रयासों के साथ मिलकर ये हस्तक्षेप महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और कृषि उत्पादकता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकते हैं। कृषि में महिलाओं की आर्थिक भूमिका महत्वपूर्ण है, फिर भी अक्सर इसे कम आंका जाता है। सैद्धांतिक दृष्टिकोण महिलाओं के मजदूरों, किसानों और उद्यमियों के रूप में बहुमुखी योगदान को उजागर करते हैं, और कृषि उत्पादकता और घरेलू कल्याण के लिए उनके सशक्तिकरण की परिवर्तनकारी क्षमता पर जोर देते हैं। संसाधन कार्यों में लैंगिक असमानताओं को संबोधित करना इन लाभों को प्राप्त करने के लिए उपकर, निर्णय लेने और सामाजिक मानदंडों का अनुपालन आवश्यक है। लक्षित नीतियां और समावेशी विकास दृष्टिकोण महिलाओं की आर्थिक क्षमता को अनलॉक कर सकते हैं, जिससे स्थायी कृषि विकास और ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिल सकता है।

5. कृषि में महिला सशक्तिकरण के निर्धारक

कृषि में महिलाओं का सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और संस्थागत कारकों से प्रभावित होती है। इन निर्धारकों को समझना उन हस्तक्षेपों को डिजाइन करने के लिए महत्वपूर्ण है जो कृषि प्रणालियों के भीतर महिलाओं की भागीदारी, एजेंसी और लाभों को बढ़ाते हैं। यह खंड कृषि में महिला सशक्तिकरण के प्रमुख निर्धारकों की खोज करता है, जिसमें उत्पादक संसाधनों तक पहुँच, शिक्षा और कौशल विकास, सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड और संस्थागत समर्थन शामिल हैं, जिसमें उनकी परस्पर जुड़ी भूमिकाओं और निहितार्थों पर विशेष जोर दिया गया है।

5.1 उत्पादक संसाधनों तक पहुँच

5.1.1 सशक्तिकरण के लिए उत्पादक संसाधनों का महत्व

उत्पादक संसाधनों तक पहुँच को कृषि में महिला सशक्तिकरण के मूलभूत निर्धारक के रूप में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। इन संसाधनों में भूमि, ऋण, कृषि इनपुट (जैसे बीज, उर्वरक और मशीनरी) और विस्तार सेवाएँ शामिल हैं जो ज्ञान और तकनीकी सहायता प्रदान करती हैं। इन संसाधनों पर नियंत्रण महिलाओं को स्वतंत्र निर्णय लेने, अपनी उत्पादकता बढ़ाने, आय उत्पन्न करने और घरों और समुदायों के भीतर अपनी स्थिति को बेहतर बनाने में सक्षम बनाता है (मेनज़ेन-डिक एट अल., 2011)।

5.1.2 भूमि स्वामित्व और काश्तकारी सुरक्षा

भूमि स्वामित्व को अक्सर कृषि में महिलाओं के सशक्तीकरण को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण संसाधन माना जाता है। यह न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक स्थिति भी प्रदान करता है, जो घरों के भीतर महिलाओं की सौदेबाजी की शक्ति और ऋण और सरकारी कार्यक्रमों तक उनकी पहुँच को प्रभावित करता है (अग्रवाल, 1994)। इसके बावजूद, महिलाओं का भूमि स्वामित्व वैश्विक स्तर पर और भारत में अनुपातहीन रूप से कम है। अध्ययनों से पता चलता है कि कई ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं के पास या तो भूमि के शीर्षक नहीं हैं या उनके पास केवल द्वितीयक या आंशिक स्वामित्व है, जिसका मुख्य कारण प्रथागत उत्तराधिकार कानून, पितृसत्तात्मक परंपराएँ और कानूनी बाधाएँ हैं (एफएओ, 2011)। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-4) के अनुसार, ग्रामीण भारत में केवल 13% महिलाओं के पास ज़मीन है, जबकि पुरुषों के पास 46% ज़मीन है (NFHS, 2015-16)। यह असमानता महिलाओं की औपचारिक ऋण तक पहुँचने, खेती के इनपुट में निवेश करने या कृषि बाज़ारों में आत्मविश्वास से जुड़ने की क्षमता को काफी हद तक सीमित करती है। सुरक्षित भूमि स्वामित्व सशक्तिकरण से निकटता से जुड़ा हुआ है क्योंकि यह महिलाओं को ऋण तक पहुँचने, सरकारी योजनाओं के लिए पात्रता और अपने आप में किसानों के रूप में मान्यता प्रदान करता है (मीनज़ेन-डिक एट अल., 2011)। इसके विपरीत, असुरक्षित भूमि स्वामित्व महिलाओं को विस्थापन और हाशिए पर जाने के प्रति संवेदनशील बनाता है, जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता कमज़ोर होती है।

5.1.3 ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुँच

महिला किसानों के लिए इनपुट खरीदने, तकनीक में निवेश करने और अपने कृषि कार्यों को बढ़ाने के लिए किफायती और समय पर ऋण तक पहुँच आवश्यक है। हालांकि, संपार्श्विक (मुख्य रूप से भूमि) की कमी, सीमित वित्तीय साक्षरता और भेदभावपूर्ण ऋण देने की प्रथाओं (क्विसुम्बिंग एट अल., 2014) के कारण ग्रामीण महिलाओं में वित्तीय बहिष्कार व्याप्त है। माइक्रोफाइनेंस संस्थानों और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) ने बिना संपार्श्विक के छोटे ऋण प्रदान करके महिलाओं की ऋण तक पहुँच को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, ऋण का आकार अक्सर महत्वपूर्ण कृषि निवेशों के लिए अपर्याप्त होता है, और पुनर्भुगतान दबाव धन के प्रभावी उपयोग को सीमित कर सकता है (मेयूक्स, 2001)। इसके अतिरिक्त, केवल ऋण महिलाओं को तब तक सशक्त नहीं बना सकता जब तक कि वित्तीय शिक्षा और सहायक सेवाएँ न हों।

5.1.4 विस्तार सेवाएँ और सूचना पहुँच

कृषि विस्तार सेवाएँ किसानों को नई कृषि तकनीकों, कीट प्रबंधन, बाज़ार के रुझान और जलवायु अनुकूलन रणनीतियों के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं। हालाँकि, लिंग-असंवेदनशील वितरण विधियों, पुरुष-प्रधान विस्तार कर्मचारियों और महिलाओं की गतिशीलता को प्रतिबंधित करने वाले सामाजिक मानदंडों के कारण विस्तार प्रणालियाँ अक्सर महिलाओं को हाशिए पर रखती हैं (मीनज़ेन-डिक एट अल., 2011)। यह बहिष्कार महिलाओं की बेहतर तकनीकों और प्रथाओं को अपनाने की क्षमता को सीमित करता है, जिससे उत्पादकता अंतराल को मजबूत किया जाता है।

महिला विस्तार एजेंट, समूह प्रशिक्षण जैसे अभिनव दृष्टिकोण आईसीटी प्लेटफॉर्म के उपयोग और उपयोग ने महिलाओं की सूचना तक पहुँच को बेहतर बनाने में वादा दिखाया है (एफएओ, 2011)।

5.2 शिक्षा और कौशल विकास

5.2.1 सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा कृषि में महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है, जो सूचना तक पहुँचने, नवाचारों को अपनाने और निर्णय लेने में भाग लेने की उनकी क्षमता को प्रभावित करती है। शिक्षित महिलाओं के बेहतर कृषि पद्धतियों को समझने और लागू करने, संसाधनों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करने और बाजारों और घरों में बेहतर शर्तों पर बातचीत करने की अधिक संभावना है (कबीर, 1999)।

अध्ययनों से महिलाओं की शैक्षिक प्राप्ति और उनकी कृषि उत्पादकता के बीच एक मजबूत संबंध दिखाया गया है। भारत में, उच्च महिला साक्षरता दर वाले क्षेत्रों में कृषि में महिलाओं की भागीदारी के उच्च स्तर और आधुनिक तकनीकों को अधिक अपनाने की भी रिपोर्ट है (कुमार और शर्मा, 2018)।

5.2.2 कृषि और व्यावसायिक प्रशिक्षण

औपचारिक शिक्षा से परे, लक्षित कृषि प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम महिलाओं को उनके तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक कौशल को बढ़ाकर सशक्त बनाते हैं। ये कार्यक्रम फसल प्रबंधन, पशुपालन, कटाई के बाद प्रसंस्करण और विपणन जैसे क्षेत्रों को कवर करते हैं, जिससे महिलाओं को आय स्रोतों में विविधता लाने और मूल्य संवर्धन में सुधार करने में मदद मिलती है (मीनजेन-डिक एट अल., 2011)। हालांकि, प्रशिक्षण तक पहुंच अक्सर सामाजिक मानदंडों, घरेलू जिम्मेदारियों के कारण समय की कमी और लिंग-संवेदनशील पाठ्यक्रम की कमी के कारण सीमित होती है। भागीदारी और प्रभाव को अधिकतम करने के लिए महिलाओं के अनुकूल प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्थान और कार्यप्रणाली प्रदान करना आवश्यक है।

5.2.3 क्षमता निर्माण के माध्यम से सशक्तिकरण

नेतृत्व विकास और वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण सहित क्षमता निर्माण पहल महिलाओं को कृषि गतिविधियों से परे अपनी एजेंसी को बढ़ाने में सक्षम बनाती है। नेतृत्व कौशल में प्रशिक्षित महिलाओं के किसान सहकारी समितियों, सामुदायिक समूहों और नीति संवादों में भाग लेने की अधिक संभावना होती है, जिससे उनकी आवाज़ और प्रभाव बढ़ता है (विश्व बैंक, 2012)। क्षमता निर्माण उद्यमशीलता को भी बढ़ावा देता है, महिलाओं को कृषि व्यवसाय उपक्रमों, मूल्य श्रृंखलाओं और नवाचार अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे उनका आर्थिक सशक्तिकरण बढ़ता है।

5.3 सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड

5.3.1 पितृसत्तात्मक संरचनाएँ और लैंगिक भूमिकाएँ

पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाएँ कृषि में महिलाओं के सशक्तीकरण में सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक हैं। गहरी जड़ें जमाए हुए सांस्कृतिक मानदंड लैंगिक भूमिकाओं को परिभाषित करते हैं जो महिलाओं को मुख्य रूप से अवैतनिक घरेलू काम सौंपते हैं और उनकी गतिशीलता, संसाधनों तक पहुँच और निर्णय लेने में उनकी भागीदारी को सीमित करते हैं (अग्रवाल, 1994)। ये मानदंड भूमि उत्तराधिकार को भी प्रभावित करते हैं, जहाँ संपत्ति आम तौर पर पुरुष वंश के माध्यम से जाती है, जो प्रभावी रूप से महिलाओं को भूमि के स्वामित्व और नियंत्रण से बाहर कर देती है (एफएओ, 2011)। महिलाओं का श्रम योगदान, हालांकि पर्याप्त है, अक्सर पुरुषों के काम के पूरक के रूप में माना जाता है, जो असमानताओं को मजबूत करता है।

5.3.2 अंतर्संबंध: जाति, वर्ग और जातीयता

महिलाओं का सशक्तिकरण जाति, वर्ग और जातीयता जैसी सामाजिक पहचानों के अंतर्संबंध से और भी जटिल हो जाता है, जो संसाधनों और अवसरों तक पहुँच को आकार देते हैं। उदाहरण के लिए, निचली जातियों या आदिवासी समुदायों की महिलाओं को सामाजिक बहिष्कार, भेदभाव और आर्थिक हाशिए पर होने सहित कई तरह के नुकसानों का सामना करना पड़ता है (कुमार और शर्मा, 2018)।ये परस्पर जुड़ी पहचानें अक्सर घरों और समुदायों में महिलाओं की एजेंसी की डिग्री निर्धारित करती हैं, जो कृषि उत्पादन में भाग लेने और समान रूप से लाभ उठाने की उनकी क्षमता को प्रभावित करती हैं।

5.3.3 गतिशीलता प्रतिबंध और सामाजिक पूंजी

सम्मान और सुरक्षा के इर्द-गिर्द सामाजिक मानदंडों द्वारा उचित ठहराए जाने वाले महिलाओं की शारीरिक गतिशीलता पर प्रतिबंध, बाजारों, विस्तार सेवाओं और सामूहिक कार्रवाई प्लेटफार्मों तक उनकी पहुँच को सीमित करते हैं। यह अलगाव उनकी सामाजिक पूंजी को कम करता है - सूचना, ऋण और सहायता तक पहुँचने के लिए महत्वपूर्ण नेटवर्क और संबंध (मीनज़ेन-डिक एट अल।, 2011)। इसके विपरीत, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और महिला सामूहिकों में भागीदारी सामाजिक पूंजी के निर्माण, सहकर्मी समर्थन को बढ़ावा देने और सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाने में प्रभावी साबित हुई है (मेयूक्स, 2001)।

5.4 संस्थागत समर्थन

5.4.1 सरकारी कार्यक्रमों की भूमिका

सरकारी कार्यक्रम संसाधनों, प्रशिक्षण, ऋण और बाजार संपर्कों तक पहुंच प्रदान करके कृषि में महिलाओं के सशक्तीकरण को सक्षम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) जैसी योजनाएं महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में

संगठित करने, माइक्रोक्रेडिट की सुविधा प्रदान करने और आजीविका विविधीकरण को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करती हैं (भारत सरकार, 2016)। ऐसे कार्यक्रमों ने महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और आय सृजन को बढ़ाने में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है, हालांकि समावेशिता, पर्याप्त संसाधन आवंटन और निरंतर प्रभाव सुनिश्चित करने में चुनौतियां बनी हुई हैं।

5.4.2 गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) का योगदान

एनजीओ अक्सर लिंग-संवेदनशील प्रशिक्षण, वकालत और सामुदायिक लामबंदी प्रदान करके औपचारिक संस्थानों द्वारा छोड़े गए अंतराल को पाटने में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। इन्ट्स (मीनजेन-डिक एट अल., 2011)। एनजीओ के नेतृत्व वाली पहल महिलाओं के अधिकारों, लैंगिक समानता और नेतृत्व विकास के बारे में जागरूकता को भी बढ़ावा देती है, जो सामाजिक मानदंडों में बदलाव और एजेंसी में वृद्धि में योगदान देती है।

5.4.3 स्वयं सहायता समूहों और सहकारी समितियों का महत्व

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) और महिला सहकारी समितियां सामूहिक कार्रवाई के लिए मंच प्रदान करती हैं, जिससे महिलाएं संसाधनों को एकत्र करने, ज्ञान साझा करने और ऋण प्राप्त करने में सक्षम होती हैं। ये समूह सामाजिक सामंजस्य को बढ़ाते हैं और आपसी समर्थन और आर्थिक सहयोग के लिए स्थान बनाकर महिलाओं को सशक्त बनाते हैं (मेयूक्स, 2001)। एसएचजी के माध्यम से, महिलाओं ने अपनी बचत की आदतों, ऋण पहुंच और बाजार में भागीदारी में सुधार किया है, जिसने सीधे तौर पर सशक्तीकरण और कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में योगदान दिया है।

5.4.4 संस्थागत सहायता में चुनौतियाँ

संस्थागत सहायता की उपलब्धता के बावजूद, नौकरशाही बाधाओं, कार्यक्रम डिजाइन में लिंग संवेदनशीलता की कमी और हाशिए के समूहों तक सीमित पहुँच के कारण महिलाओं को अक्सर पूर्ण लाभ उठाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है (भारत सरकार, 2016)। सहायता प्रणालियों को मजबूत करने के लिए संस्थागत जवाबदेही, लिंग-संवेदनशील नीतियाँ और सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। कृषि में महिलाओं का सशक्तिकरण उत्पादक संसाधनों, शिक्षा, सामाजिक मानदंडों और संस्थागत समर्थन तक पहुँच के जटिल अंतर्संबंध से प्रभावित होता है। सुरक्षित भूमि अधिकार, ऋण और प्रौद्योगिकी तक पहुँच और लिंग-संवेदनशील विस्तार सेवाएँ सशक्तिकरण के लिए आर्थिक आधार बनाती हैं। साथ ही, शिक्षा और क्षमता निर्माण महिलाओं के कौशल और एजेंसी को बढ़ाता है। सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड व्यापक संदर्भ को आकार देते हैं जिसके भीतर सशक्तिकरण सामने आता है, जबकि प्रभावी संस्थागत समर्थन महिलाओं को क्षमता को मूर्त लाभों में बदलने में सक्षम बनाता है। इन निर्धारकों को समग्र रूप से संबोधित करना न्यायसंगत और टिकाऊ कृषि विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

6. कृषि में महिला सशक्तिकरण में बाधाएँ

- भूमिहीनता और स्वामित्व का अभाव: महिलाओं के पास अक्सर बहुत कम या कोई भूमि अधिकार नहीं होता (अग्रवाल, 1994)।
- ऋण और इनपुट तक सीमित पहुँच: वित्तीय बहिष्कार निवेश क्षमता को बाधित करता है (क्विसुम्बिंग एट अल., 2014)।
- अपर्याप्त विस्तार सेवाएँ: लिंग-असंवेदनशील विस्तार ज्ञान हस्तांतरण को सीमित करता है (एफएओ, 2011)।
- सामाजिक मानदंड और लिंग भूमिकाएँ: घरेलू ज़िम्मेदारियाँ और सांस्कृतिक प्रतिबंध भागीदारी को सीमित करते हैं (कबीर, 1999)।

7. महिला सशक्तिकरण और नीति हस्तक्षेप: एक सैद्धांतिक समीक्षा

7.1 सरकारी पहल

एनआरएलएम जैसे कार्यक्रम सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए महिला स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देते हैं (भारत सरकार, 2016)।

7.2 माइक्रोफाइनेंस और एसएचजी

माइक्रोफाइनेंस और एसएचजी महिलाओं को ऋण तक पहुँच प्रदान करते हैं और सामाजिक पूंजी को मजबूत करते हैं (मेयूक्स, 2001)।

7.3 कानूनी सुधार

भूमि सुधार और लिंग-संवेदनशील नीतियाँ महिलाओं के संपत्ति अधिकारों और सशक्तीकरण में सुधार करती हैं (अग्रवाल, 2003)।

8. देहरादून जिले में महिला सशक्तीकरण को प्रासंगिक बनाना

देहरादून की सामाजिक-आर्थिक और कृषि-जलवायु प्रोफ़ाइल कृषि में महिलाओं की भूमिका और सशक्तीकरण को प्रभावित करती है। बागवानी, डेयरी फार्मिंग और विविध फ़सल पर जिले की निर्भरता सशक्तिकरण की स्थानीय समझ को ज़रूरी बनाती है (सिंह और राणा, 2017)।

9. निष्कर्ष

कृषि में सैद्धांतिक रूपरेखा और महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण

कृषि में महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण की बहुमुखी प्रकृति को समझने के लिए सैद्धांतिक रूपरेखा अपरिहार्य उपकरण के रूप में काम करती है। वे सशक्तिकरण से संबंधित अंतर्निहित कारकों, प्रक्रियाओं और परिणामों का विश्लेषण करने के लिए संरचित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जिससे शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और चिकित्सकों को सूचित और प्रभावी हस्तक्षेप डिजाइन करने में मदद मिलती है। कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाना केवल उनकी भागीदारी बढ़ाने का मामला नहीं है; इसमें शक्ति संबंधों, संसाधनों तक पहुँच, निर्णय लेने के अधिकार और सामाजिक मानदंडों को बदलना शामिल है जो उनके आर्थिक अवसरों और एजेंसी को आकार देते हैं (कबीर, 1999)।

एक आधारभूत ढाँचा नैला कबीर की सशक्तिकरण की अवधारणा है जो संरचनात्मक असमानताओं के संदर्भ में एजेंसी के विस्तार के रूप में है - सार्थक विकल्प बनाने की क्षमता। कबीर इस बात पर जोर देते हैं कि सशक्तिकरण एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें संसाधन (भौतिक, मानवीय, सामाजिक), एजेंसी (निर्णय लेने, बातचीत) और उपलब्धियाँ (विकल्पों के परिणाम) शामिल हैं (कबीर, 1999)। इस ढाँचे को कृषि में लागू करने से यह उजागर होता है कि कैसे महिलाओं की भूमि, ऋण, प्रौद्योगिकी और शिक्षा (संसाधन) तक पहुँच बढ़ी हुई सौदेबाजी शक्ति और निर्णयों में भागीदारी (एजेंसी) के साथ मिलकर बेहतर आर्थिक परिणाम (उपलब्धियाँ) प्राप्त करती है। लिंग और विकास (जीएडी) सिद्धांत इस बात को और भी रेखांकित करता है कि सशक्तिकरण को सामाजिक-सांस्कृतिक और संस्थागत संरचनाओं में अंतर्निहित प्रणालीगत लैंगिक असमानताओं को संबोधित करना चाहिए। यह महिलाओं को निष्क्रिय लाभार्थियों से बदलाव के सक्रिय एजेंटों के रूप में ध्यान केंद्रित करता है, जो महिलाओं की आर्थिक भूमिकाओं को प्रतिबंधित करने वाले सामाजिक मानदंडों, कानूनों और प्रथाओं के परिवर्तन की वकालत करता है (मोजर, 1993)। कृषि संदर्भ में, इसका अर्थ है पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देना जो महिलाओं के भूमि स्वामित्व को सीमित करते हैं, गतिशीलता को प्रतिबंधित करते हैं अनुभवजन्य अध्ययन और सैद्धांतिक मॉडल इस विचार पर सहमत हैं कि कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने से उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। जब महिलाओं के पास उत्पादक संसाधनों और निर्णय लेने की प्रक्रिया पर नियंत्रण होता है, तो वे भूमि और इनपुट में अधिक कुशलता से निवेश करती हैं, नवीन तकनीकों को अपनाती हैं और फसलों में विविधता लाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप अधिक पैदावार होती है (क्विसुम्बिंग एट अल., 2014)। कृषि उत्पादकता में यह वृद्धि घरेलू और सामुदायिक स्तरों पर भोजन की उपलब्धता और विविधता को बढ़ाकर सीधे खाद्य सुरक्षा में योगदान देती है। उत्पादकता से परे, महिलाओं का सशक्तिकरण सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा देता है। सशक्त महिलाएँ अपनी आय को बाल पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च करती हैं, जिससे सकारात्मक परिणाम मिलते हैं जो मानव पूंजी और भविष्य की आर्थिक संभावनाओं को बेहतर बनाते हैं (विश्व बैंक, 2012)। इसके अलावा, ग्रामीण बाजारों और मूल्य श्रृंखलाओं में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रोत्साहित करती है और आर्थिक झटकों के खिलाफ लचीलापन बढ़ाती है। जबकि ये सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि सामान्य सिद्धांत प्रदान करती हैं, उनके अनुप्रयोग के लिए विशिष्ट क्षेत्रों के अद्वितीय सामाजिक-सांस्कृतिक और संस्थागत परिदृश्यों के संदर्भ की आवश्यकता होती है। देहरादून जिला, अपनी विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों और पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं की विशेषता के कारण, महिला सशक्तिकरण के लिए विशेष चुनौतियाँ और अवसर प्रस्तुत करता है। देहरादून में, जड़ जमाए हुए पितृसत्तात्मक मानदंड अक्सर महिलाओं के भूमि स्वामित्व और निर्णय लेने के अधिकार को प्रतिबंधित करते हैं, जबकि ऋण और विस्तार सेवाओं तक सीमित पहुँच उनकी आर्थिक एजेंसी में बाधा डालती है (सिंह और राणा, 2017)। इसलिए, स्थायी सशक्तिकरण के उद्देश्य से नीतियों को इन स्थानीय बाधाओं को दूर करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। इसमें न केवल उत्पादक संसाधनों तक महिलाओं की पहुँच में सुधार करना शामिल है, बल्कि जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक मानदंड परिवर्तन को बढ़ावा देना, लिंग-संवेदनशील विस्तार सेवाओं के माध्यम से संस्थागत समर्थन बढ़ाना और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं की सामूहिक कार्रवाई को मजबूत करना भी शामिल है।

10. संदर्भ

अग्रवाल, बी. (1997)। सौदेबाजी और लिंग संबंध: घर के भीतर और बाहर। नारीवादी अर्थशास्त्र, 3(1), 1-51।

अग्रवाल, बी. (2003)। लिंग और भूमि अधिकारों पर पुनर्विचार: राज्य, परिवार और बाजार के माध्यम से नई संभावनाओं की खोज। एग्रेरियन चेंज जर्नल, 3(1-2), 184-224।

अग्रवाल, बी. (2003)। लिंग और भूमि अधिकारों पर पुनर्विचार: राज्य, परिवार और बाजार के माध्यम से नई संभावनाओं की खोज। एग्रेरियन चेंज जर्नल, 3(1-2), 184-224।

अलसोप, आर., और हेनसन, एन. (2005)। व्यवहार में सशक्तिकरण को मापना: संरचनात्मक विश्लेषण और फ्रेमिंग संकेतक। विश्व बैंक नीति अनुसंधान कार्य पत्र 3510।

डॉस, सी. (2011)। कृषि में महिलाओं की भूमिका। ईएसए कार्य पत्र संख्या 11-02। संयुक्त राष्ट्र का खाद्य और कृषि संगठन।

एफएओ। (2011)। खाद्य और कृषि की स्थिति: कृषि में महिलाएँ - विकास के लिए लिंग अंतर को कम करना। संयुक्त राष्ट्र का खाद्य एवं कृषि संगठन।

भारत सरकार। (2016)। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) परिचालन दिशानिर्देश। ग्रामीण विकास मंत्रालय।

कबीर, एन. (1999)। संसाधन, एजेंसी, उपलब्धियाँ: महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार। विकास और परिवर्तन, 30(3), 435-464।

कुमार, ए., और शर्मा, एस. (2018)। भारतीय कृषि में महिलाएँ: स्थिति, बाधाएँ और सशक्तिकरण रणनीतियाँ। भारतीय कृषि अर्थशास्त्र पत्रिका, 73(1), 85-98।

मयूक्स, एल. (2001)। नकारात्मक पक्ष से निपटना: कैमरून में सामाजिक पूंजी, महिला सशक्तिकरण और सूक्ष्म वित्त। विकास और परिवर्तन, 32(3), 435-464।

मेनजेन-डिक, आर., क्विसुम्बिंग, ए., बेहरमैन, जे., बियरमायर-जेन्ज़ानो, पी., वाइल्ड, वी., नूर्डेलोस, एम., रागासा, सी., और बेइंटेमा, एन. (2011)। कृषि अनुसंधान को लिंग आधारित बनाना। अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान।

मोजर, सी. (1993)। लिंग नियोजन और विकास: सिद्धांत, अभ्यास और प्रशिक्षण। रूटलेज।

एनएसएसओ. (2019). रोजगार और बेरोजगारी सर्वेक्षण. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार.

पुतनम, आर.डी. (1995). अकेले गेंदबाजी: अमेरिका की घटती सामाजिक पूंजी. जर्नल ऑफ डेमोक्रेसी, 6(1), 65-78.

क्विसुम्बिंग, ए., मेनजेन-डिक, आर., राने, टी., क्रॉपेनस्टेड, ए., बेहरमैन, जे., और पीटरमैन, ए. (2014). कृषि में लिंग: ज्ञान अंतर को कम करना. स्प्रिंगर.

सेन, ए. (1999). स्वतंत्रता के रूप में विकास. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

सिंह, आर., और राणा, ए. (2017). कृषि उत्पादकता में लैंगिक असमानताएँ: उत्तराखंड का एक केस स्टडी. जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 36(3), 305-320.
सिंह, आर., और राणा, ए. (2017). कृषि उत्पादकता में लैंगिक असमानताएँ: उत्तराखंड का एक केस स्टडी। ग्रामीण विकास जर्नल, 36(3), 305-320।
सिंह, आर., और राणा, ए. (2017)। कृषि उत्पादकता में लैंगिक असमानताएँ: उत्तराखंड का एक केस स्टडी। ग्रामीण विकास जर्नल, 36(3), 305-320।
स्मिथ, एल.सी., रामकृष्णन, यू., एनडियाये, ए., हद्दाद, एल., और मार्टोरेल, आर. (2003)। विकासशील देशों में बाल पोषण के लिए महिलाओं की स्थिति का महत्व। अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान।
संयुक्त राष्ट्र। (2015)। सतत विकास लक्ष्य।
विश्व बैंक। (2012)। विश्व विकास रिपोर्ट 2012: लैंगिक समानता और विकास। विश्व बैंक प्रकाशन।